ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

भारत की सांस्कृतिक व नैतिक समस्या एवं गाँधीवादी विकल्प

India's Cultural and Moral Problem and Gandhian Alternative

Paper Submission: 12/09/2020, Date of Acceptance: 24/09/2020, Date of Publication: 25/09/2020

अशोक कुमार महला
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान
राजकीय कला महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

गाँधी जी हृदय से नागरिकों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व नैतिक समस्या को दूर करने की स्वतंत्रता समाज में चाहते थे। गाँधी जी ने राजनीति का आध्यात्मिकरण कर उसे नैतिक व धार्मिक मूल्यों के साथ जोड़कर प्रकट किया। गाँधी जी समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान मानते हुए मानवीय समस्या को सुलझाने का प्रयास किया करते थे। भारत में सांस्कृतिक व नैतिक समस्या का शांतिपूर्ण निदान चाहते थे। ताकि प्रत्येक नागरिक को मानवता के प्रति भाइचाारे से रहकर अपनी प्रत्येक समस्या को सुलझाने तथा समायोजन करने का रास्ता मिल सके। गाँधीजी ने एक आदर्श समाज की कल्पना की है। जिसमें बल प्रयोग नहीं वरन् नैतिकता की भावना हो। गाँधीजी ने नैतिकता को जीवन के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया है। नैतिकता के विषय में गाँधीजी ने अहिंसा को अत्यधिक महत्व दिया है। अहिंसा सर्वोच्च धर्म तथा सर्वोच्च नैतिकता है। ईश्वर और सत्य को समझाने और प्राप्त करने के लिये प्रेम सबसे बड़ा साधन है।

Gandhiji wholeheartedly wanted freedom in the society to overcome the social, political, economic, cultural and moral problems of the citizens. Gandhiji spiritualized politics and revealed it by associating it with moral and religious values. Gandhiji tried to solve the human problem by treating every person as equal in society. He wanted a peaceful solution to the cultural and moral problem in India. So that every citizen can find a way to solve each of their problems and make adjustments, living in harmony with humanity. Gandhiji has envisioned an ideal society. In which there is no sense of force but a sense of morality. Gandhiji accepted morality as the basic basis of life. Regarding morality, Gandhiji has given great importance to non-violence. Ahimsa is the highest religion and highest morality. Love is the greatest tool for explaining and achieving God and truth.

मुख्य शब्द : नैतिकता, अहिंसा, सत्य, सक्रिय प्रेम, असीम प्रेम, व्यापक करूणा, अनन्त धैर्य, सत्यमेव जयते, अविश्रान्त अन्वेषण, सत्यागृह, निष्क्रिय प्रतिकार।

Ethics, Non-Violence, Truth, Active Love, Infinite Love, Universal Compassion, Eternal Patience, Satyameva Jayate, Uninterrupted Exploration, Satyagrah, Passive Retribution.

प्रस्तावना

मनुष्य अपने जीवन को सदैव निर्दोष और निर्मल रख कर ही जीवन की प्रत्येक समस्याओं का सामना करने में सफल हो सकता है समाज में फैली बुराई, अंधविश्वास, झूठ से लड़ने तथा सत्य की सिढी को प्राप्त करने का ज्ञान ही गाँधीवादी दर्शन का मूल उद्देश्य है तथा प्रत्येक वर्ग व समाज में सभी नागरिकों को साहसी बनाकर अपने राष्ट्र में सत्य, प्रेम, शांति, सद्भावना व अहिंसा जागृत करता है। गाँधीजी के सत्य के परिवेश में केवल व्यक्ति ही नहीं वरन् समूह, समाज और सम्पूर्ण मानव जाति सम्मिलित है। गाँधीजी ने राजनीति को धर्म से कभी अलग नहीं माना। सत्य, अहिंसा तथा सत्यागृह के साधन से भारत में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का संचालन किया। मनुष्य को चारित्रिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक बल प्रदान करने के लिए साधन और साध्य का चुनाव सार्वजनिक जीवन में किया जाना चाहिए। गाँधी जी प्रत्येक राज्य के लिए

नैतिकता की भावना रखते हुए, जनता के नेता होते हुए भी उनके साथ समायोजन की भावना रखते थे।

मानवीय जीवन में सत्य व अहिंसा का पालन धर्म, राजनीति, समाज व नैतिकता सभी में होना चाहिए। व्यक्ति व समाज का कोई पक्ष सत्य से अछुता ना रहे। गाँधीजी ने व्यक्तिगत आधार पर किए गए प्रयासों को सामाजिक हित सम्बन्धों से जोड़ा है। यदि अहिंसा को हम निषेधात्मक अर्थों में ही सीमित नहीं रखना चाहे तो भावनात्मक रूप से इसे गाँधीजी ''सक्रिय प्रेम और व्यापक करूणा'' कहते हैं। इसी को रोमों रोला ने ''अनन्त धैर्य और असीम प्रेम''[1] की संज्ञा दी है।

गाँधी जी ने सर्वसम्पन्न राष्ट्र की कामना करते हुए कहा कि, हमें सामाजिक, राजनीति, आर्थिक, सांस्कृतिक व नैतिक सभी समस्याओं से निकलने व समस्या को मिटाने का प्रयास करते रहना है। राज्य एक आवश्यक दुर्गुण है जो मानवीय जीवन के सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों पर आघात करता है। हमें गाँधी जी के बताये हुए मार्ग पर चलकर राज्य से परे एक जनतन्त्र वादी समाज का निर्माण करना है और राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक व नैतिक आधारों पर राज्य को दूर करना है। प्रजा को निडर होकर अपने सामाजिक जीवन का पालन करना चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. गाँधीवादी विकल्प के माध्यम से वर्तमान समस्या को सुलझाना।
2. वर्तमान समय में चल रहे अनेक आन्दोलनों में गाँधीजी के अस्त्रों के प्रयोग की उपयोगिता का अंकलन करना।
3. उन परिस्थितियों का उल्लेख करना जिनमें गाँधीजी द्वारा दिये गये विरोध के साधन अधिक प्रभावी है।
4. सांस्कृतिक व नैतिक समस्या में संदर्भ में गाँधीवादी विकल्प का अध्ययन।
5. सद्जीवन न्याय एवं लोक कल्याण की समस्या का गाँधीवादी विकल्प के अनुसार

परिकल्पना

परिकल्पना के रूप में निम्न अनुत्तरित प्रश्नों का निर्धारण किया गया है–

1. गांधीय विकास प्रतिमान में निहित दार्शनिक मूल्यों की अनुपालना और सतत् विकास के पथ पर चलने से किस प्रकार वैश्विक समस्याओं ग्लोबल वार्मिग, आर्थिक विषमता नवउपनिवेशवाद पार्थक्यबोध, मूल्यों का पतन, बाजारवाद, अधिक उत्पादन का समुचित समाधान किया जा सकता है।
2. वर्तमान सांस्कृतिक व नैतिक व्यवस्था में जातिगत समाज के हित संवर्धन की भावना में वृद्वि हुई है तथा राजनीतिक लाभ प्राप्त करने की औचित्यपूर्ण प्रवृति को प्रोत्साहन मिला है जिससे हमारे राष्ट्र व समाज में परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक व नैतिक परिदृश्य में परिवर्तन आ रहे हैं, का अध्ययन किया जाना आवष्यक है।
3. अवसरवादिता, स्वार्थपरता एवं चरित्रहीनता से उत्पन्न समस्या का निदान व गाँधीवादी विकल्प।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः द्वितीयक सूचना स्रोतों पर आधारित है। शोध पत्र में सांस्कृतिक व नैतिक पक्षों का समुचित विवेचन तथ्यात्मक व अवधारणात्मक दोनों स्तरों पर शामिल है। शोध पत्र हेतु उपादेय सामग्री विभिन्न पुस्तकालयों व विवि के गांधी अध्ययन केन्द्र तथा राजघाट, नई दिल्ली के गांधीय अध्ययन केन्द्र से जुटाई गयी। यह शोध पत्र तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है।

गाँधी जी का सम्पूर्ण जीवन ही सत्य एवं अंहिसा का अविरल यात्रा थी। गाँधी सत्य के मार्ग पर चलने की हर सम्भव प्रयास करते थे। वे राजनीति के संत थे। गाँधी जी ने राजनीति का आध्यात्मिकरण कर उसे नैतिक व धार्मिक मूल्यों के साथ जोड़कर प्रकट किया। गाँधी जी हृदय से नागरिकों की सांस्कृतिक व नैतिक समस्या को दूर करने की स्वतंत्रता समाज में चाहते थे। स्वतंत्रता को पवित्र वस्तु तथा स्वराज्य को सत्य का ही अंग मानते थे।

गाँधी जी ईश्वर में जीवन्त विश्वास रखते थे। तथा ईश्वर की आस्था दूसरों पर बल पूर्वक ना थोपकर दया व करूणा से मनवाने के इच्छुक थे। गाँधी जी ने ईश्वर को एक जीवन्त शक्ति मानते हुए मानवीय जीवन को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक शक्तियों से संचालित माना है। ईश्वर में आस्था व्यक्ति के हृदय में नया ज्ञान तथा प्रकाश लाकर जीवन को निखारती है। ईश्वर में आस्था व्यक्ति के हृदय में नया ज्ञान तथा प्रकाश लाकर जीवन को निखारती है। ईश्वर को बुद्धि व तर्क की कसौटी पर नहीं जानकर श्रद्धा से अपने अन्दर विकसित करना चाहिए। गाँधी जी ने ईश्वर को सर्वव्यापक सत्य मानते हुए उसे शुभ – अशुभ का मालिक माना है। क्योंकि ईश्वर ने बुराई पैदा करके स्वयं उससे कहीं ना कहीं अधुरा रहा है। बुराई से युद्ध करना ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने का एक सबल मार्ग है।

मानवीय जीवन नाना प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। इसमें गाँधीवाद मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व नैतिक समस्याओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बताते हुए अन्तःकरण की भावना से प्रेरित करता है। गाँधी जी ने ईश्वर को सत्य प्रेम और अन्तःकरण भी कहा है। ''सत्य ईश्वर है'' की धारणा को सम्पूर्ण मानव जाति को अपना कर सत्य के मंच पर भिन्न – भिन्न मान्यताओं वाले व्यक्तियों को भी एक मंच पर एकत्रित किया जा सकता है। इस प्रकार सत्य जीवन में एकता लाने वाला शब्द है। गाँधी जी का सम्पूर्ण जीवन सत्यमय था। वे सत्य के सामने किसी बात से समझौता नहीं करके सत्य और ईश्वर में कोई भेद नहीं मानते थे। मानवीय व्यवहार और कार्य सत्य के लिए होना चाहिए। अतः मानवीय जीवन में वाणी, विचार और आचार का सत्य होना भी सत्य है और सत्य की पूजा ही ईश्वर की सच्ची भक्ति है।

मनुष्य अपने जीवन को सदैव निर्दोष और निर्मल रख कर ही जीवन की प्रत्येक समस्याओं का सामना करने में सफल हो सकता है समाज में फैली बुराई, अंधविश्वास, झूठ से लड़ने तथा सत्य की सिढी को प्राप्त करने का ज्ञान ही गाँधीवादी दर्शन का मूल उद्देश्य है तथा प्रत्येक वर्ग व समाज में सभी नागरिकों को साहसी बनाकर अपने

राष्ट्र में सत्य, प्रेम, शांति, सद्भावना व अहिंसा जागृत करता है। मनुष्य को चारित्रिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक बल प्रदान करने के लिए साधन और साध्य का चुनाव सार्वजनिक जीवन में किया जाना चाहिए। गाँधी जी प्रत्येक राज्य के लिए नैतिकता की भावना रखते हुए, जनता के नेता होते हुए भी उनके साथ समायोजन की भावना रखते थे।

मानवीय जीवन में सत्य व अहिंसा का पालन धर्म, राजनीति, समाज व नैतिकता सभी में होना चाहिए। व्यक्ति व समाज का कोई पक्ष सत्य से अछुता ना रहे। गाँधीजी ने व्यक्तिगत आधार पर किए गए प्रयासों को सामाजिक हित सम्बन्धों से जोड़ा है।

गाँधी जी राज्य को एक कुण्ठित शक्ति मानते हैं जो मानव के व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। गाँधीजी ने एक आदर्श समाज की कल्पना की है। जिसमें बल प्रयोग नहीं वरन् नैतिकता की शवना हो तथा आदर्श समाज को विकेन्द्रीत आवश्यक इसलिए माना क्योंकि केन्द्रीकरण से थोड़े से मनुष्यों के हाथ में शक्ति होने से समाज में व राज्य में नैतिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक समस्या उत्पन्न होती है। अतः आदर्श समाज विकेन्द्रीकरण समाज होगा।

गाँधी जी प्रत्येक नागरिक को उच्च स्तर की शिक्षा, अहिंसा एवं आत्म–सम्मान प्राप्त करने वाला बनाना चाहते थे। मानवीय जीवन को बाहरी आक्रमण के विरूद्व अपनी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व नैतिक समस्या से उभरने व स्वयं के हितों की रक्षा के लिए शिक्षित करना चाहते थे। एक आदर्श व सम्पन्न समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी विशिष्ट क्षमता के अनुसार समाज सेवा करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए, इसके लिए वे प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करना चाहते थे कि व्यक्ति भेद – भाव रहित, सत्य – अहिंसा एवं शारीरिक श्रम के आदर्श पर आधारित समाज को ग्रामीण सभ्यता व संस्कृति को भी अपनाएगा यही इच्छा गाँधीजी की थी।

वर्तमान समस्या एवं गाँधी मार्ग के दो सत्य

वर्तमान जीवन जटील होता जा रहा है। समस्या व्यापक होती जा रही है। इस आणविक युग में मनुष्य जीवन की समस्याएं गाँधी मार्ग द्वारा ही दूर हो सकती हैं। गाँधी मार्ग के दो सत्य हैं, पहला – सत्य का प्रयोग, दूसरा – 'अहिंसा का संगठन'–

सत्य का प्रयोग

व्यवहार में गाँधी जी को जो कुछ आज जैसा धर्म, न्याय और योग्य प्रतीत होता है। सत्य ही धर्म का पर्याय है । सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं, कोई तक नहीं[2], कोई बल नहीं।[3] वह 'सत्य' एवं उसका अविश्रान्त अन्वेषण एवं तदानुसार आचरण ही सत्यागृह है, जो सत्य के साक्षात्कार का मार्ग है। जहां सत्य है, वहीं जय है–सत्यमेव जयते नानृतम्।[4]

सांस्कृतिक व नैतिक समस्या को सुलझाने का 'प्रयास' सत्य की साधना है। कर्महीन विचार बुद्धि विलास है एवं सत्यविहीन वाणी, शब्दों का अपव्यय एवं निरर्थक प्रपंच है। इसलिए गाँधीजी ने सत्य के प्रयोग किए ना कि प्रवचन किए। सत्य का सिद्धान्त नहीं दिया बल्कि सत्य की साधना की। गाँधीजी के सत्य के प्रयोग की सबसे बड़ी देन यह रही है कि उन्होंने सत्याचरण को केवल वैयक्तिक जीवन का श्रृंगार नहीं, बल्कि इसको सांस्कृतिक व नैतिक जीवन का भी अविभाज्य अंग माना है।

अहिंसा का संगठन

गाँधी जी का मानना था कि सत्य की वास्तविक साधना अहिंसा के बिना असंभव है, क्यों कि सत्य साध्य है, तो अहिंसा साधन। 'अहिंसा का संगठन' ही गाँधीजी की सबसे बड़ी एवं युग की सबसे बड़ी घटना थी। उन्होंने अहिंसा का दर्शन नहीं बल्कि उसकी तकनीक दी है। अहिंसा की विशाल परम्परा और प्रेरक 'शक्तियाँ भारत में ही नहीं, बल्कि समस्त विश्व में आदिकाल से ही रही है। यही नहीं गांधीजी ने अहिंसा का सामुदायिक संगठन कर उसे सत्यागृह के नाम से प्रयोग में लाया। गाँधी जी का मानना था कि अहिंसा हमारे सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन की बुराइयों का निराकरण नहीं कर सकती है, तो बेकार है। अहिंसा को गाँधीजी ने धार्मिक और नैतिक क्षेत्रों में उपयोग करके दिखाया। गाँधीजी ने कहा था कि अहिंसा के बिना सत्य की भी साधना संभव नहीं है।[5] गाँधीजी ने बराबर इस बात पर बल दिया कि अहिंसा और कायरता दोनों साथ–साथ नहीं चल सकती है। उन्होंने तो यहां तक कहा कि कायरता से हिंसा अच्छी है।''[6] अहिंसा का अर्थ यदि प्रेम होता है तो फिर वहां शोषण और उत्पीड़न का स्थान नहीं होगा।[7] गाँधी ने अन्याय से लड़ने के लिए नीतिबल पर आधारित अहिंसक युद्ध–प्रणाली का अविष्कार किया, जिसे ''सत्याग्रह'' कहा गया है। इसीलिए सत्याग्रह ''निष्क्रिय प्रतिकार'' है।[8]

गाँधीजी ने नैतिकता को जीवन के मूल आधार के रूप मे स्वीकार किया है। व्यक्ति ईश्वर को अन्यत्र नहीं, किन्तु अपने आप में पा सकता है। व्यक्ति स्वयं दैवी गुणों से युक्त है। सत्यान्वेषण, तपस्या, आत्म–संयम तथा इन्द्रिय–निग्रह से व्यक्ति बुराइयों से ऊपर उठकर अपना चरम विकास प्राप्त कर सकता है। आत्म–विजय प्राप्त करने के लिए लालायित व्यक्ति को किसी उच्च आदर्श की ओर प्रवृत होना आवश्यक है, अन्यथा उसका जीवन नीरस एवं एकान्त हो जायेगा। इस कार्य के लिए मनुष्य को भौतिक जीवन एवं भौतिक प्रगति का समन्वय करना होता है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित का समन्वय सर्वभूतहित अर्थात् सभी के कल्याण की प्रेरणा प्रस्तुत करता है तथा मानव को ईश्वर तुल्य बना देता है। मनुष्य जब तक ईश्वर तुल्य नहीं बन जाता, तब तक उसे शन्ति नहीं मिल सकती। इस स्थिति की प्राप्ति का प्रयास ही सर्वोच्च एवं एकमेव महत्वाकांक्षी है इस प्रकार मानव की नैतिक प्रवृति प्रयोजन से प्राप्त तथा सम्भावना से वास्तविकता की ओर सतत परिवर्तन की परिचायिका है। धर्म भी नैतिक नियम का पर्यायवाची है। धार्मिक व्यक्ति वही है जो नैतिकता के अनुरूप जीवन जीता है। गांधीजी के अनुसार सच्चा धर्म वहीं है जो पवित्रता प्रदान करता है। 'ऐसा धर्म नैतिकता के आन्तरिक रूप में सम्बद्ध है जिस प्रकार बीज से पानी । धर्म के लिए नैतिकता अनिवार्य है।'[9] 'गाँधीजी धर्म को अन्तःमुख विकास का रूप मानते हैं, उसे बुद्धि और तर्क का विषय नहीं ।'[10]

नैतिकता के विषय में गाँधीजी ने अहिंसा को अत्यधिक महत्व दिया है। अहिंसा सर्वोच्च धर्म तथा सर्वोच्च नैतिकता है। ईश्वर और सत्य को समझाने और प्राप्त करने के लिये प्रेम सबसे बड़ा साधन है। अहिंसा को भावात्मक रूप से हम प्रेम भी कह सकते है। प्रेम के माध्यम से ही जीवात्मा अपने क्षुद्र स्वार्थ को छोड़ता जाता है। यह मेरे–तेरे का भेद मिटाता है और व्यक्ति को पदार्थ और परेपकार की ओर अधिक से अधिक ले जाकर अंत में सर्वव्यापी ईश्वर के समीप ला देता है। मानव के अन्दर प्रेम सचमुच एक दैवी नियम है। मानो, प्रेम के रूप में परमात्मा का ही मानव हृदय में निवास होता है। इस ईश्वरीय गुण के बिना मनुष्य अपने क्षुद्र स्वार्थों में ही लीन रहता है। जो शक्ति प्रेम में है, वह और किसी में नहीं। इसलिये जो काम बड़े से बड़े तर्क और बल प्रयोग से नहीं हो सकता, वह सहज ही प्रेम के द्वारा सिद्ध हो सकता है। प्रेम भावना के कारण हमारा कर्तव्यपालन भी सुखद हो जाता है। प्रेम का हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश है। वह हमारा जीवन रसमय और संगीतमय बना देता है।

गाँधीजी ने नैतिकता की साधना के लिए ज्ञान को भी स्वीकार किया है। ज्ञान के बिना नैतिकता के नियमों का पालन अंधानुकरण मात्र रह जाता है। ज्ञान द्वारा आत्म–विश्लेषण का विकास होता है। स्वार्थ तथा परमार्थ का अंतर करने में सहायता मिलती है। आत्म–षुद्धि के लिए भी ज्ञान की आवश्यकता रहती है, किन्तु केवल आत्म–विलेषण पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। मनुष्य को अपने बोर में उस तरह से भी देखना और सोचना चाहिए जैसा दूसरे लोग उस मनुष्य के बारे में सोचते हैं। इस प्रकार नैतिकता में मनुष्य का चेतन मस्तिष्क कार्य करता है। ज्ञान के प्रयोग के बिना बाह्य अनिवार्यता से किया गया कार्य नैतिक नहीं होता। गाँधीजी के अनुसार, ''कोई काम तभी नैतिक कहा जा सकता है, जब हम उसे सोच–समझकर कर्तव्य–भावना से करते हैं। जो काम भय या बल–प्रयोग के कारण होता है, वह कदापि नैतिक नहीं कहा जा सकता।

गाँधीजी ने आत्मा की शक्ति को दर्शाते हुए मानव के दैहिक बन्धनों से मुक्ति को महत्व दिया है। मानव अपने सांसारिक बन्धनों में लिप्त रह कर काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह के कारण आत्मा का विशुद्ध ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता। कस्तूरी वाले मृग के समान वह अपने अंतराल को खोजे बिना बाह्य चकाचौंध का शिकार बनता है। यदि वह आत्म–बल के अनुसार व्यवहार करना प्रारम्भ कर दे तो उसे मानवता की सेवा का अपूर्व उत्साह प्राप्त हो सकता है। आत्म–बल मानव को परमार्थ के लिये प्रेरित करता है, क्योंकि मानव मात्र में सर्वशक्तिमान सत्ता का अंश विद्यमान है। मानव–प्रेम तथा विनम्रता पर आधारित आत्म–बल पशु–बल से भिन्न है। इसमें अहंकार कोई स्थान नहीं। गाँधीजी के अनुसार ''सच्ची नम्रता सचमुच लोकसंग्रह की भावना से किया गया पूर्णरूपेण दृढ़ एवं निरंतर कर्मयोग है। ईश्वर अविराम कर्मरत है। इसलिए यदि हम उसकी भक्ति करना चाहते हैं या फिर उन्हीं में तदाकार हो जाना चाहते हैं तो हमें भी निरंतर कर्म की साधना करनी होगी। यही कठोर साधना हमारे लिये सच्चा विश्राम होगा। यही अविराम कर्मयोग हमारी अवर्णनीय शांति की कुंजी होगा।''

इस प्रकार गाँधी जी समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान मानते हुए मानवीय समस्या को सुलझाने का प्रयास किया करते थे।

साहित्यावलोकन

डॉ. रामजीसिंह (1986) गाँधी दर्शन मीमांसा – इस पुस्तक में गाँधीजी ने सत्य और अहिंसा, उद्योग और संस्कृति, दासता व मूर्तिपूजा, कायिक श्रम, मानव विज्ञान आदि का अध्ययन किया है। गांधजी ने अपने विचारों को इस प्रकार प्रकट करने पर बल दिया जिससे प्रत्येक व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो सके, वह समाज में समानता का व्यवहार करें।

डॉ. पवित्र कुमार शर्मा (2009) सामाजिक समस्याऐं : कारण एवं समाधान – विषय पर अपना शोध ग्रन्थ लिखा है जिसमें वर्तमान भारत की समस्या, मनुष्य के जीवन की व्यक्तिगत समस्या, समाज की समस्या, निर्धनता, बेरोजगारी, निरक्षरता, जनसंख्या वृद्वि, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़े वर्ग की समस्याऐं, कृषक एवं मजदूरों की समस्याऐं, भ्रष्टाचार प्रदुषण, शारीरिक रोग, श्रम असंतोष, आतंकवाद, महिलाओं के विरूद्व दुष्कर्म, मद्यपान स्वास्थ्य एवं शोषण, बाल श्रमिक, गाँव एवं शहरों आदि की समस्या जो समाज के आगे चुनौतियां हैं। जिन्हें दूर करने के उपाय या समाधान दिये गये हैं।

विपस्सना सुधा–(2002) प्रथम संस्करण – भारतीय राजनीति में नैतिक संकट– विषय पर उन्होंने लिखा है कि आज राजनीति में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं राष्ट्रीय चिन्तन की जरूरत है। राजनीति के चारित्रिक संकट से उभरने के लिए राजनीति का पवित्रिकरण आवश्यक है। राजनीति में दिनों–दिन विघटनकारी तत्वों की शक्ति बढ़ रही है। दोहरी अर्थव्यवस्था के साथ–साथ देश में अपराधियों, समाजकंटकों व उग्रवादियों की दोहरी राजव्यवस्था भी प्रकट हो रही है। भारतीय राजनीति में उतरोतर बढ़ती इस स्तरहीनता का एक मात्र कारण राजनीति का नैतिकता के पथ पर अग्रसर होना है। आज जरूरत इस गंद भी राजनीति से स्वार्थ, संवेदनहीनता और अनीतिगत आचरण को अलग करने की है।

आर.पी. मिश्रा गांधीयन मॉडल ऑफ डवलपमेन्ट एण्ड वर्ल्ड पीस, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली (1988) इस पुस्तक में वर्तमान प्रौद्योगिकी द्वारा उपजी समस्याओं यथा गरीबी, सामाजिक विषमता, बेरोजगारी, उपभोक्तावाद, अति उत्पादन आदि का वर्णन बसूबी किया गया है।

निष्कर्ष

गांधीजी भारत में सभी सांस्कृतिक व नैतिक समस्या का शांतिपूर्ण निदान चाहते थे। ताकि प्रत्येक नागरिक को मानवता के प्रति भाइचाारे से रहकर अपनी प्रत्येक समस्या को सुलझाने तथा समायोजन करने का रास्ता मिल सके। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग और सद्भावना गाँधीवादी मार्ग दर्शन के मूल आधार हैं। मानवीय जीवन नाना प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। इसमें गाँधीवाद मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक,

राजनीतिक व नैतिक समस्याओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बताते हुए अन्तःकरण की भावना से प्रेरित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रोमा रोल्याः ''महात्मा गांधी'', भारत सरकार प्रकाशन विभाग, पृष्ठ सं 01*
2. *महाभारत : ''शांति पर्व'', अध्याय 162 पृ 40*
3. *महाभारत की उक्ति : ''सत्य ही परम् बलम्''*
4. *युककोपनिषद् 3/1/16*
5. *पब्लिकेशन डिवीजन राष्ट्र निर्माता गांधी, सूचना व प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली, पृ 15*
6. *एम के गांधी : ''हरिजन'' 1 मार्च 1935*
7. *एम के गांधी : ''यंग इण्डिया'' 19 जनवरी 1928*
8. *एम के गांधी : ''हिन्द स्वराज'' पृ 21*
9. *सुन्दरम आई : गांधीयन थोट, पृष्ठ संख्या 31*
10. *सुमन, रामनाथ :गांधीवाद की रुपरेखा, पृष्ठ संख्या 37*